भगवान् परशुराम जी का संक्षिप्त

'जीवन वृत्त'

श्री ब्राह्मण-सभा पठानकोट द्वारा

बिरचित

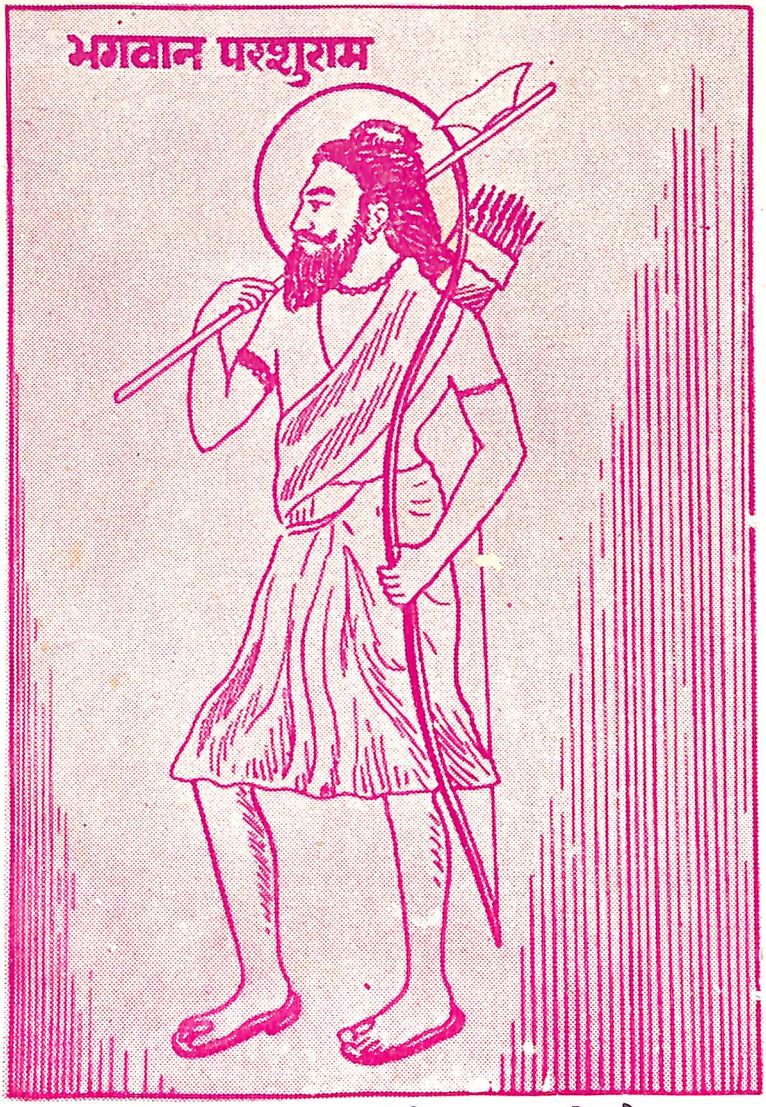

श्री परशुराम जयंती पर उन्हीं के

चरण-कमलों में सादर-समर्पित

मु० : -चमन लाल खन्ना, अमर ज्यो ग्रेग प्रैस, फगवाड़ा गेट, जालन्धर ।

'श्री परशुराम जी का वंश-वृक्ष'

सृष्टि कर्ता श्री ब्रह्माजी

↓

श्री भृगु ऋषि

↓

श्री ऋचीक मुनि

↓

भगवान् यमदग्नि

↓

सकृतवान | सुषेण | वसु | विश्वावसु | श्री परशुराम

दो शब्द

श्री ब्राह्मण सभा पठानकोट का ब्राह्मण वर्ग भगवान परशुराम जयन्ती समारोह कार्य में अधिकाधिक योगदान देकर ब्राह्मण-वर्ग में नव-जागरण उत्पन्न कर के उन्हें पुनः प्रतिष्ठा-प्रदान करेगा ऐसी प्रेरणा देने के लिये ही इस छोटी पुस्तिका 'श्री परशु राम जीवन-वृत्त' का प्रकाशन हो रहा है। आशा है कि सभी बन्धु इसे पढ़ कर कृतार्थ होंगे।

प्रधान
श्री ब्राह्मण सभा
पठानकोट

17—4—1980.

'विप्र कुल-कमल-दिवाकर भगवान परशुराम जी महाराज'

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्ध श्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्व वेदाः। स्वस्तिनस्ताक्ष्यों-अरिष्ट नेमिः स्वस्ति नो वृहस्पतिर्दधातु।

धर्म प्रधान भारत भूमि में जब जब अत्याचार बढ़ जाते हैं तथा धर्म का ह्रास होने लगता है तो सर्वशक्तिमान् भगवान विष्णु युग और समय की परिस्थिति के अनुसार विभिन्न रूप धारण कर के पृथ्वी पर अवतरित होते हैं। भगवान श्री कृष्ण अपने मुख से स्वयं कहते हैं :—

यदा यदा हि धर्मस्य, ग्लानि भवति भारतः
अभ्युत्थानम धर्मस्य, तदात्मानं सृजाम्यहम्
परित्राणाय साधूनां, विनाशाय च दुष्कृताम्
धर्म संस्थापनार्थाय, संभवामि युगे युगे

श्री मद् भगवत् गीता अ. ४/७, ८/

इसी सिद्धान्त के अनुसार जब त्रेतायुग में पृथ्वी पर धन, जन तथा यौवन से उन्मत्त बने हुए क्षत्रियों ने चारों ओर अत्याचार आरम्भ कर दिये तो उन के पापों से आक्रान्त वसुन्धरा के भय को दूर करने के लिये भगवान विष्णु ने भगवान 'परशुराम' को आज्ञा दी कि जब तक 14 कला पूर्ण भगवान श्री राम चन्द्र का अवतार नहीं होता, तब तक आप दुष्ट क्षत्रियों का दमन करें। श्री विष्णु जी ने भगवान परशुराम को अपना दिव्य धनुष भी प्रदान किया तथा कहा कि इस की सहायता से ही आप मेरे रामावतार को पहिचान सकेंगे।

१. : भगवान परशुराम जी की वंशावली

भगवान परशुराम जी के पूज्य पितामह श्री ऋचीक मुनि ब्राह्मण श्रेष्ट उन भृगु ऋषि के पुत्र थे जिन्होंने मानव-जाति को मनुस्मृति के अनुसार चलने की सर्व प्रथम आज्ञा इन शब्दों में दी है :—

एतद्वोऽयं भृगु शास्त्रं श्रावयिष्यत्यशेषतः

एतद्धि मत्तोऽधिजगे सर्वमेषोऽ खिलंमुनि :

(मनुस्मृति अ. १/ ५९/)

ऋचीक मुनि ब्रह्मचर्याश्रम की समाप्ति के उपरान्त कन्नौज (कान्यकुब्ज) के प्रतापी राजा गाधी से, उन की सुन्दर कन्या सत्यावती को पत्नी के रूप में प्राप्त करने के लिये उन के दरबार में गये, परन्तु राजा गाधी ने उन्हें दरिद्र समझकर टालने की इच्छा से उत्तर दिया कि भृगुनन्दन ! हमारे कुल की परम्परा है कि हम वर से निश्चित धन प्राप्त करके ही उसे कन्या प्रदान करते हैं। जब ऋषि ऋचीक ने गाधि से इस के विषय में पूछा कि वह निश्चित निधि क्या है ! तो गाधी राज ने कहा कि यदि आप मेरी पुत्री से विवाह करना चाहते हैं तो इस के उपलक्ष्य में आपको वायु के समान तेज गतिशील, चन्द्रमा के समान सुन्दर तथा काले काले कानों वाले सफेद रंग के एक हज़ार घोड़ें देने पड़ेंगे। गाधि राज के असम्भव शब्दों को सुनकर ऋचीक ऋषि जल के देवता अदितिनन्दन वरुण के पास गये तथा उन से ऊपर के गुण वाले हज़ार घोड़े प्रदान करने की प्रार्थना की।

वरुण देव ने उन्हें प्रसन्नता पूर्वक वर दिया कि आप जहां कामना करेंगे वहां ही आप को उक्त लक्षणों वाले हज़ार घोड़े प्राप्त हो जायेंगे। कुछ समय के उपरान्त ऋचीक ऋषि के गंगा नदी के तट पर चिन्तन करते ही गंगा जल से सहस्त्र घोड़ें प्रकट हो गये। कन्नौज के पास आज उस पवित्र स्थान को **अश्वतीर्थ** के नाम से पुकारा जाता हैं।

तत्पश्चात् ऋचीक मुनि उन घोड़ों को लेकर गाधि राज के पास गये, उन की तपस्या के प्रभाव से तथा उन के शाप से डर कर राजा गाधि ने अपनी पुत्री सत्यवती को श्रेष्ट वस्त्र तथा अलंकारों के सजाकर ऋषि को सौंप दिया। सत्यवती भी महान् तपस्वी ऋचीक ऋषि को पति के रूप में प्राप्त करके बड़ी प्रसन्न हुई।

२. भृगु ऋषि का ऋचीक आश्रम में पधारना

कुछ समय के उपरान्त अपने पुत्र ऋचीक तथा पुत्रवधु को देखने के लिये भृगु ऋषि ऋचीक आश्रम में आए। ऋचीक तथा सत्यावती ने मन वचन और कर्म से उन का सत्कार किया। उन के सेवा भाव से प्रसन्न होकर भृगु ऋषि ने कहा

कि—हे सौभाग्य वती पुत्रवधु ! तू इच्छित वर मांग उन की प्रसन्नता से प्रभावित हो कर सत्यवती ने वरदान मांगा कि मैं और मेरी माता दोनों ही पुत्रवती हों।

इसके उपरान्त अपने वरदान की पूर्ति के लिये ऋषिवर भृगु ने दो पुत्रेष्टि चरु तैयार किये और सत्यवती से कहा कि धर्म-पुत्री ! ये दो प्रकार के चरु हैं। इस ब्रह्म तेज रूप चरु को भुलर वृक्ष का आलिंगन कर के तुम खा लेना और दूसरे क्षत्रिय तेज युक्त चरु को पीपल के वृक्ष का आलिंगन कर के तुम्हारी माता खाले। इस के फल स्वरूप तुम्हारे गर्भ से तपो निष्ठ बालक उत्पन्न होगा तथा तुम्हारी माता के गर्भ से महान् वीर धनुर्धारी क्षत्रिय बालक उत्पन्न होगा। ऐसी आज्ञा देकर भृगु ऋषि अर्न्तध्यान हो गये। कुछ समय बाद सत्यवती अपनी माता के पास गई तथा उसे आदि से अन्त तक चरु प्राप्ति का समाचार सुनाया। जिसे सुन कर सत्यवती की माता ने कहा कि हे पुत्री ! हम दोनों चरु भक्षण और वृक्षों के आलिंगन में अदल बदल कर लें तो अच्छा रहेगा। सत्यवती ने माता के इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया तथा दोनों ने उसी विधि से चरु भक्षण और वृक्षों का आलिंगन किया। परिणाम स्वरूप दोनों ने गर्भ धारण किया।

३. भृगु ऋषि का पुनः ऋचीक आश्रम में पदार्पण

अपने कुल के कल्याण के इच्छुक परम तपस्वी भृगु ऋषि ज्ञान-दृष्टि के द्वारा माता-पुत्री के चरु भक्षण की विपरीत विधि को जान गए। उन्होंने सत्यवती से कहा कि तुम ने माता के कहने से चरु को बदल कर अच्छा नहीं किया। अब तुम्हारे गर्भ से उग्रकर्मा, क्षत्रिय-कुल संहारक राजर्षि वीर उत्पन्न होगा और तुम्हारी माता के गर्भ से शान्त, तपस्वी, ब्राह्मण-गुण से युक्त ब्रह्मर्षि पुत्र उत्पन्न होगा। उन के कहने से भयभीत होकर सत्यवती ने हाथ जोड़ कर प्रार्थना की कि भगवन् मेरे गर्भ से राजर्षि पुत्र उत्पन्न न हो कर ब्रह्मर्षि-पुत्र ही उत्पन्न होना चाहिए मेरा पौत्र भले ही उग्र कर्मा तथा क्षत्रिय-गुण युक्त हो। भृगु ऋषि ने कहा कि पुत्र और पौत्र में विशेष अन्तर नहीं होता : अब तुम्हारी इच्छा के अनुसार तुम्हारा पौत्र ही प्रतापी तेजवान विश्वविख्यात क्षत्री- धर्मा होगा।

४. महर्षि यमदग्नि का जन्म तथा विवाह

भृगु ऋषि द्वारा प्रदत्त चरुओं के प्रभाव से सत्यवती ने महर्षि **यमदग्नि** को जन्म दिया और सत्यवती की माता ने परम तपस्वी **विश्वामित्र** जी को जन्म दिया।

ब्रह्मचर्याश्रम की समाप्ति के उपरान्त महर्षि यमदग्नि ने राजा **प्रसेन जित** की पुत्री **रेणुका** से विवाह किया और रेणुका के गर्भ से **सकृमवान, सुषेण, वसु, विश्वास** और महामना **परशुराम जी** इन पांच पुत्रों का जन्म हुआ।

५. 'परशु राम जी की शंकर आराधना'

भृगु वंशी परशुराम जी ने गधमादन-पर्वत पर आशुतोष महादेव जी की अनन्य भक्ति कर उन्हें गुरु-रूप में वरण किया। भगवान शंकर ने अपने शिष्य परशु राम जी को नाना प्रकार के अस्त्र तथा अकुंठित धार वाला एक महान् कुठार प्रदान किया। जिस से वे अद्वितीय वीर बन गये।

६. श्री परशुराम द्वारा पिता की आज्ञा का पालन

एक दिन महर्षि यमदग्नि की धर्म पत्नी रेणुका स्नान के लिये नदी के तट पर गई वहां मर्तिका देश का राजा चित्ररथ अपनी महिषियों के साथ नग्नावस्था में जल-क्रीड़ा कर रहा था।

'स्तेन मनः अवृतवादिनी वाक्

इस वैदिक सूक्त के अनुसार रेणुका के मन में काम-विकार का प्रादुर्भाव हुआ तथा वह बहुत देर तक उन की जल-क्रीड़ा को देखकर आनन्द अनुभव करती रही तथा उन्मत्तावस्था में ही आश्रम में आ गई। उसके विकृत भावों को जानकर महर्षि यमदग्नि को बड़ा क्रोध उत्पन्न हुआ उन्होंने घर में स्थित अपने चारों पुत्रों को आज्ञा दी कि तुम शीघ्र ही अपनी माता का वध कर दो। परन्तु उन्होंने मातृ स्नेह के कारण अपने पिता की आज्ञा का पालन नहीं किया। इस लिये यमदग्नि ने उन्हें जड़वत् निस्तेज होने का शाप दिया। तदन्तर उसी समय बन से लौटे परशुराम जी को पिता ने उनकी माता का वध करने की आज्ञा दी। श्री परशु राम जी ने उसी समय

कुठार से अपनी माता का वध कर डाला। महर्षि यमदग्नि ने आज्ञाकारी पुत्र परशु-राम जी के इस कार्य से प्रसन्न हो कर उन्हें वर मांगने के लिये कहा। परशुराम जी ने ये वर मांगे :—

१. मेरी पूज्य माता जी जीवित हो जायें परन्तु मेरे द्वारा उनका सिर काटने का उन्हें स्मरण न रहे।

२. मेरे भाई आप के शाप से मुक्त हो जायें।

३. मैं रणभूमि में अजेय बनूं।

४. मेरी दीर्घायु हो।

महर्षि यमदग्नि ने मुक्त-कंठ से तथास्तु कहा। परिणाम स्वरूप परशुराम जी उग्रकर्मा वीर-रणधीर बन कर भूतल पर सूर्य के समान प्रकाशित हुए।

७. परशुराम जी का पहला पराक्रम और हैहयराज कार्तिवीर्य अर्जुन का वध महिस्मती नगरी में हैहयवंशी कार्तवीर्य अर्जुन का शासन था। और कार्तिवीर्य अर्जुन ने मुनिवर दत्तामेय की अनन्य मन से आराधना की थी उनसे एक सुवर्णनिर्मित शक्तिशाली विमान तीव्र गामी रथ और युद्ध भूमि में सहस्त्र भुजा प्राप्ति का वरदान प्राप्त किया। वरदानों के प्रभाव से वह त्रिलोकी पर शासन करता था वह धन जन तथा बल के अभिमान में गौ ब्राह्मण देवता और ऋषिमुनियों को त्रस्त करके आनन्द का अनुभव करता था क्षत्रीय ही जगत में उत्तम है, इन्हीं के सहारे पृथ्वी खड़ी है शेष तीन वर्णों को क्षत्रियों की उपासना करनी चाहिए। उसने ऐसा आदेश अपनी प्रजा को दे रखा था।

कार्तवीर्य ने भृगुपति परशुराम की वीरता और पराक्रम की गाथाएं सुनीं तो उनके यश से चिढ़ गया। एक दिन वह परशुराम की अनुपस्थिति से यमदग्नि ऋषि के आश्रम में आया उस समय परशुराम जी की माता आश्रम में अकेली थीं। उन्होंने राजा का कंदमूल फलों द्वारा सत्कार करना चाहा परन्तु बल में प्रमत्त कार्तवीर्य ने पागल हाथी की तरह ऋषि आश्रम को नष्ट भ्रष्ट कर डाला और काम धेनु को सताने की इच्छा से उसके बछड़े का हरण कर लिया।

बन से आश्रम में लौटने पर परशुराम जी आश्रम की दशा तथा वात्सल्य के कारण तड़पती हुई काम धेनु को देख कर कार्तवीर्य पर कुपित हुए व अपनी माता सम्मुख प्रतिज्ञा की कि वह तत्काल ही कार्तवीर्य का पीछा करके रणभूमि में बलात् उसकी भुजा काट कर ही आश्रम वापिस आएगा। ऐसा ही हुआ उन्होंने कार्तवीर्य के साथ घमासान युद्ध करके उसे परास्त किया और रणभूमि में ही उस यम लोक पहुंचा दिया।

८. **सहस्त्र बाहु के पुत्रों द्वारा यमदग्नि का वध,** सहस्त्र बाहु की मृत्यु के दुःख से संतृप्त उसके पुत्रों ने परशुराम जी की अनुपस्थिति में यमदग्नि आश्रम पर आक्रमण कर दिया। आश्रम में प्रवेश करके तीखे शास्त्रों से यमदग्नि ऋषि जी की प्रतिशोध रूप में हत्या कर डाली तथा स्वयं भाग गये।

९. **पति की मृत्यु पर रेणुका का रुदन और परशुराम की प्रतिज्ञा :—** रेणुका मृत पति को देख कर छाती पीट पीट कर उच्च स्वर में रोने लगी तत्काल ही परशुराम जी आश्रम में आए पूज्य पिता का दाह संस्कार करके माता के सामने प्रतिज्ञा की कि मैं 21 बार समस्त पृथ्वी के दुष्ट क्षत्रियों का विनाश करूंगा और पृथ्वी ब्राह्मणों को दान करूंगा।

१०. **परशुराम जी का पराक्रम और क्षत्रियों का विनाश :—** सर्व प्रथम रेणुका नन्दन ने पिता के हत्यारे सहस्त्रबाहु के पुत्रों को यमसदन का अतिथि बनाया इसके पश्चात् युद्ध के लिए संगठित हुए चौंसठ सहस्त्र क्षत्रियों का एक मात्र धनुष से जीत लिया।

दन्तक्रूर नामक राजा को बलपूर्वक मार डाला तदनन्तर एक सहस्त्र क्षत्रियों को मूसल मार डाला एक हज़ार राजपूतों को तलवार से काट डाला। एक सहस्त्र राजपूतों को वृक्षों की शाखाओं पर फांसी लटका दिया और एक हज़ार को पानी में डूबो दिया। ब्राह्मणों का उपहास करने वाले एक सहस्त्र क्षत्रियों के दांत तोड़ कर तथा कान काट कर स्वर्ग गामी बना दिया। कहते हैं कि खून से पांच कुण्ड भर गए इस प्रकार 18 द्वीपों को अपने वश में करके उत्तम दक्षिणाओं से युक्त सौ पवित्र यज्ञों का अनुष्ठान किया। 21 बार पृथ्वी जीतने के बाद अन्तिम यज्ञ में 82 हाथ ऊंची और 36 हाथ चौड़ी सुर्वण वेदी बनाकर परशुराम जी ने महर्षि कश्यप जी को पृथ्वी समेत दान कर दी महर्षि कश्यप पारदर्शी, दूरदर्शी ऋषि थे। वह जानते थे कि बसुन्धरा का शासन

ब्राह्मणों से न हो सकेगा। उस समय क्षत्रीय शासन सम्भालेंगे। इस लिए क्षत्रियों को बचाने की इच्छा से उन्होंने परशुराम को आदेश दिया कि वह मेरे राज्य से दक्षिण की ओर समुद्र के किनारे चले जाएं। परशुराम जी को राज्य से निकाल कर कश्यप जी ने पृथ्वी का शासन ब्राह्मणों को सम्भाल दिया और स्वयं तपस्या के लिए बन में चले गए।

उधर परशुराम ने जी जितनी दूर वाण फेंका जा सकता था उतनी दूर समुद्र को पीछे हटा कर **'शूरपारक'** देश का निर्माण किया और स्वयं महेन्द्र पर्वत पर चले गए।

११. **ब्राह्मणों के शासन से त्रस्त पृथ्वी की कश्यप जी से प्रार्थना तथा क्षत्रियों का पुनरुत्थान :**—क्षमा-भूषणात्मक-ब्राह्मणों के शासन में अनाचार भ्रष्टाचार तथा अराजकता फैल गई। दुरात्मा अपने मन माने अत्याचारों से जनता को पीड़ित करने लगी। पापों से बसुन्धरा कांप उठी। और महर्षि कश्यप जी के पास जाकर करुणा प्रकट करने लगी कि 'ऋषिवर! मुझे अपनी रक्षा के लिए पराक्रमी धर्मात्मा तथा उत्तम चरित्रवान् भूपाल क्षत्रिय शासक की आवश्यकता है। इस समय भी बहुत से वीर क्षत्रिय यत्र तत्र आश्रय लेकर रह रहे थे। वह सभी शासन सम्भालने में समर्थ हैं वे क्षत्रिय ये हैं :—

१. ऋक्षवान् पर्वत पर ऋच्छे द्वारा पालित पुरुवंशी विदुरथ का पुत्र भी जीवित है।

२. सौदास पुत्र भी सुरक्षित है।

३. महाराजा शिषि का गोपति नाम का पुत्र भी बचा है।

४. गौशाला के बछड़ों में पला राजा प्रवर्तन का महाबली-पुत्र वत्स भी मेरी रक्षा कर सकता है।

५. दधिवाहन का पौत्र तथा दिविरथ का पुत्र भी गंगा किनारे महर्षि गौतम द्वारा सुरक्षित है।

७. राजा मरुत-वंश में भी कई क्षत्रिय बालक सुरक्षित हैं। एवं और भी स्वर्ण काट तथा अन्य जातियों में छुपे हुए कई राजपुत्र हैं। यह सभी शासन सम्भाल कर पापात्माओं को दण्ड देकर पुण्य का राज स्थापित कर सकते हैं। पृथ्वी की प्रार्थना सुनकर महर्षि कश्वप ने सभी पराक्रमी क्षत्रिय राजपुत्रों को बुलाकर उन्हें भिन्न-भिन्न राज्यों पर अभिषिक्त कर दिया।

"नव संवर्षों में सदा पनपती है नव युग की आशा" सिद्धान्त के अनुसार पृथ्वी पर शान्ति स्थापित हो सकी।

१२. **काशीराज की कन्या के न्यायार्थ परशुराम जी का भीष्म से युद्ध :—** काशी राज की अम्बा, अम्बिका और अम्बालिका कन्याओं के स्वयंम्वर में भीष्म जी विश्व विश्रुत महान् धर्नुधारियों को बलात परास्त करके अपने छोटे भाई, सत्यवती के पुत्र विचित्र वीर्य के विवाह के लिए काशीराज की इन तीनों कन्याओं को हर कर लाए। जब उनके विवाह का आयोजन आरम्भ हुआ तब उनमें सबसे बड़ी अम्बा ने गंगा के पुत्र भीष्म जी से प्रार्थना के स्वर में कहा कि "वीरवर! मैंने मन ही मन सौभ विमान के स्वामी महाबली शाल्वराज को अपना पति मान लिया है। अतः अन्यत्र अनुरक्त होने के कारण आप अपने भाई के साथ मेरा विबाह न करें। भीष्म जी ने विचार पूर्वक अपने विद्वान् मन्त्रियों के परामर्श से अम्बा कों शाल्वराज के पास जाने की अनुमति दे दी परम प्रसन्नता का अनुभव करती अम्बा शाल्व राज के पास गई और उन्हें पति रूप में प्राप्त करने की कामना की। परन्तु शाल्व राज ने भीष्म द्वारा विजित अम्बा पर चरित्रहीनात्मक दृष्टि की। और उसे कठोर वचन कह कर ठुकरा दिया।

तदनन्तर अम्बा मानसिक दुःख से रोती हुई अपने नाना ऋषि होत्रवाहन के आश्रम में गई और उन्हें आदि से अन्त तक अपने साथ घटी हुई घटनाओं का परिचय दिया। ऋषि होत्रवाहन ने रेणुका के पुत्र परशुराम जी के परम मित्र महर्षि अकृतव्रण से अम्बा की समस्या के समाधान के लिए परस्पर विचार किया। समाधान रूप में यह निर्णय किया गया कि महर्षि परशुराम ही भीष्म को दण्ड देकर उसकी समस्या का समाधान कर सकते हैं। वह अभी विचार कर ही रहे थे कि तत्काल ही धनुष खड्ग और अस्त्र शस्त्र लिए वीर परशु राम जी प्रकट हो गए। वहां उपस्थित होत्रवाहन आदि ऋषियों ने मधु पर्क द्वारा परशुराम का पूजन किया, उसके बाद बातचीत के प्रसंग में ऋषि होत्रवाहन तथा अकृतव्रण दोनों ने परशुराम से निवेदन किया कि हे कार्य साधन कुशल प्रभो! हम सबकी दोहत्री अम्बा महाबली भीष्म के हरणात्मक अभद्र व्यवहार से परम दुःखी है अतः कृपया आप भीष्म का मान भंजन करके काशी राज की बेटी का जीवन सुखी बनाने में सहायक बने। उनकी बात सुनकर परम दुःख से द्रवित होकर परशुराम जी ने अम्बा से कहा कि बेटी में शाल्वराज को भी तुमसे विवाह के लिए राजी कर सकता हूं और भीष्म को भी तुम्हें स्वीकार करने के लिए बाधित कर सकता हूं। अगर भीष्म मेरी आज्ञा का उल्लंघन करने का

दुःसाहस करेगा तो मैं मन्त्रियों सहित उस को भस्म कर दूँगा तुम निश्चिन्तर हो। ऐसा आश्वासन देकर ऋषिमण्डली तथा अम्बा को साथ लेकर परशु राम कुरुक्षेत्र आए, तथा भीष्म को तत्काल ही उपस्थित होने का सन्देश भेजा। गुरु जी को आया देख कर भीष्म गौ को आगे करके ब्राह्मणों तथा पुरोहितों समेत परशुराम की सेवा में उपस्थित हुए। तथा कुशलता के अनन्तर परशु राम जी ने आदेशात्मक स्वर में भीष्म जी से कहा कि—भीष्म! तुम्हारे द्वारा अम्बा के हरणात्मक कुकृत्य से अम्बा का जीवन बरबाद हुआ है और हमें अशान्ति हुई है, अब तुम अम्बा को अपना कर उसकी मानसिक अशान्ति दूर करो अन्यथा मेरे साथ कुरुक्षेत्र के मैदान में युद्ध के लिए तैयार हो जाओ। तब भीष्म जी ने अनुनय विनय पूर्वक महाबली परशुराम जी को समझाना चाहा परन्तु वह अपने हठ पर अडिग रहे। तब भीष्म जी ने वीरता पूर्ण स्वर में कहा कि गुरुवर! मैं अस्थिर चित्त अम्बा को अस्वीकार करता हुआ आप से युद्ध की घोषणा करता हूं और आपको चेतावनी देता हूं कि जब आपने अकेले ही संसार के सभी क्षत्रियों को जीत लिया था उस समय भीष्म पैदा ही नहीं हुआ था। इस युद्ध में आपको नाकों चने चबाकर बलात् धराशायी कर दूंगा ऐसा कह कर भीष्म ने हस्तिनापुर आकर माता सत्यवती से तथा ब्राह्मणों से आर्शीवाद लिया और अस्त्रों शस्त्रों से विभूषित होकर रथ पर आरूढ़ होकर कुरुक्षेत्र में आए। परशुराम जी के सामने खड़े होकर तुमुल ध्वनि से अपना शंख बजाया उस समय गंगा माता तथा समस्त देवता युद्ध देखने के लिए आए। गंगा माता ने भ्रातृस्नेह के कारण आदेशात्मक स्वर में गुरु से युद्ध करने की मनाही की परन्तु भीष्म जी ने सभी पूर्व घटित घटनाएं गंगा माता को सुनाई और युद्ध करने का दृढ़ निश्चय किया गंगा ने पुत्र स्नेह के कारण रेणुका नन्दन से भी युद्ध न करने का आग्रह किया परन्तु कुछ बात न बनी परशुराम जी ने युद्ध के लिए भीष्म जी को ललकारा परन्तु भीष्म ने कहा कि मेरे साथ युद्ध करने के लिए आपको रथारूढ़ होना पड़ेगा तथा कवच धारण करना पड़ेगा।

तब परशुराम ने अपने मानसिक संकल्प से वेगगामी रथ का निर्माण किया और सूर्य चन्द्र चिन्हों से विभूषित दृढ़ कवच धारण किया हाथों में गोह के दस्ताने पहने और युद्ध आरम्भ किया।

युद्ध से पहले रथ से उतर कर भीष्म जी ने गुरु के चरणों का स्पर्श किया धर्म युद्ध की आज्ञा मांग कर उनसे विजय प्राप्ति का आर्शीवाद प्राप्त किया तदन्नतर गुरु

शिष्य में 24 दिन अभूतपूर्व भयंकर युद्ध हुआ। परशु राम जी भीष्म जी के दिव्यास्त्रों के प्रहारों से अचेत हो जाते और भगवान शंकर प्रदत्तवाणों से भीष्म जी मूछित हो जाते थे।

एक बार जब भीष्म जी परशु राम जी के प्रबल प्रहारों से मृत प्रायः हो गये उस समय तेजिस्वी ब्राह्मण वेश धारी वसुओं ने अपने अमृतमयस्पर्श से जीवन दान दिया और प्रस्थापनास्त्र विमोचन का विधान भीष्म जी को समझाया और कहा कि-इस शस्त्र का प्रयोग करने में परशुराम असमर्थ हैं। इस शस्त्र से उन पर विजय प्राप्त करो।

तब भीष्म जी ने परशुराम जी के ब्राह्मास्त्र का निवारण कर दिया और प्रस्वापनास्त्र को धारण किया। तब समस्त देवताओं सहित गंगा माता तथा नारद जी ने प्रस्वापनास्त्र धनुष से उतरने का आग्रह किया। तब भीष्म जी ने उक्त अस्त्र को धनुष से उतार दिया पर परशुराम के मुख से सहसा यह वाक्य निकला की महाबली भीष्म तुमने मुझ मन्द बुद्धि को जीत लिया।

तदुपरान्त परशुराम जी के पिता और पितामह ने प्रकट होकर कहा कि बेटे! ब्राह्मण धर्म के विपरीत कार्य न करो युद्ध से विरत होकर तपस्या करो। इस प्रकार दोनों को देवताओं पितरों तथा गंगा माता का आग्रह पूर्वक तथा आदेशात्मक आदेश हुआ कि युद्ध अविलम्ब समाप्त करो। परन्तु वीर शिरोमणी गुरु शिष्य दोनों एक दूसरे से पराजय स्वीकार करना नहीं चाहते थे। इस लिए उनकी बातों पर उन्होंने ध्यान न दिया तब नारदादि ऋषियों तथा गंगा माता ने परशु राम जी से प्रार्थना रूपात्मक शब्दों में कहा कि ब्राह्मण का हृदय नवनीत के समान होता है, अतः आप ही शान्त हो जाएं क्योंकि तुम्हारे लिए भीष्म और भीष्म के लिए तुम अवध्य तथा अजेय हो। ऐसा कह कर सभी रण स्थली को घेर कर खड़े हो गए तथा परशुराम से अस्त्र शस्त्र रखवा लिए तब ब्रह्मवादी अष्टवसुओं ने आकाश में प्रकट होकर भीष्म को आदेश दिया कि गुरु जी को प्रणाम कर उनका आर्शीवाद ग्रहण करो तब भीष्म जी ने गुरु चरणों में सनम्र दण्डवत् प्रणाम किया तथा सदा युद्ध भूमि में अजेय रहने का आर्शीवाद प्राप्त किया।

श्री परशुराम जी की मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम जी से भेंट—

महर्षि परशु राम जी की श्री रामचन्द्र जी से भेंट का वर्णन बाल्मीकि रामायण

कालिदास जी के महा काव्य रघुवंश, महा भारत तथा श्री तुलसी कृत रामचरित् मानस इन चार ग्रंथों में मिलता है।

१. महाभारत के अनुसार रामचन्द्र जी से परशुराम की भेंट—

महा भारत में परशु राम जी भगवान राम के ईश्वर होने की परीक्षा लेने के लिये स्वयं अयोध्या में आते हैं। महाराज दशरथ उन के स्वागत के लिये पूर्ण ब्रह्म स्वरूप राम जी को ही भेजते हैं। परशुराम जी, राम जी से दिव्य धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाने तथा वाण को कान तक खींचने के लिये कहते हैं।

श्री रामचन्द्र जी भगवान परशुराम को उत्तर देते हुए बड़ी सरलता से धनुष की प्रत्यंचा (डोरी) चढ़ा कर कान तक वाण खींचने का कार्य कर दिखाते हैं। वाण फेंकने से तीनों लोकों में हा हा कार होने लगता है तथा आंधी और भूकम्प होने लगता है। इस से चारों ओर भय छा जाता है। वह अमोघ वाण परशुराम जी के तेज को हरण कर लेता है।

उसके बाद परशुराम जी अशान्त होकर इधर उधर घूमने लगते हैं। तब उनके पितृ ऋचीक मुनि प्रकट होकर उन्हें आज्ञा देते हैं कि हे पुत्र ! दोबारा तेज प्राप्त करने के लिये वधूस नामक नदी के किनारे वाले तीर्थों में स्नान करो। परशुराम जी ने ऐसा ही किया। उन्हें वहां पुनः तेज प्राप्त हुआ। उस स्थान पर दीप्तोदक नामक तीर्थ है।

२. वाल्मीकि रामायण तथा महाकाव्य रघुवंश में परशुराम जी से भगवान रामचन्द्र की भेंट का वर्णन—

बाल्मीकि रामायण तथा महाकवि कालिदास के रघुवंश महाकाव्य में भगवान रामचन्द्र जी के विवाह के उपरान्त जब बरात जनक पुरी से विदा हो कर अयोध्या जा रही थी तब मार्ग में भगवान-शिवजी के धनुष को तोड़ने से क्रोधित परशुराम जी श्री रामचन्द्र जी को कटु शब्द कह कर द्वन्द युद्ध के लिये ललकारते हैं। परन्तु जब श्री रामचन्द्र जी क्रोध में आकर अपना अचूक वाण धनुष पर चढ़ाते हैं तो उस के तेज को न सह कर परशुराम जी कांप उठते हैं। उस समय सत्यवक्ता रघुवंश के सूर्य के समान भगवान राम उन्हें ललकार कर कहते हैं कि इस अमोघबाण के द्वारा मैं आप को स्वर्ग भेज दूंगा तो भयभीत होकर परशुराम जी कहते हैं कि हे प्रभो ! मुझे यह जीवन प्रिय है। इस लिये परलोक का द्वार बन्द कर के मुझे इसी संसार में रहने दें उनके ऐसा कहने पर भगवान राम ने—

इत्युक्त्वा राघवः क्रुद्धो भार्गवस्य शरासनम्
शरं च प्रति जग्रह, हस्तामनधुपराक्रमः

भगवान राम ने अमोघ वाण फेंक कर परशुराम जी का स्वर्ग मार्ग बन्द कर दिया। अतः परशुराम जी अजर अमर बन गये।

तुलसी कृत रामायण में श्री परशुराम जी और भगवान रामचन्द्र जी की भेंट का वर्णन—

तुलसीदास की रामायण में शिव-धनुष के टूटते ही उसी समय परशु राम जी आ जाते हैं तथा राजा जनक को फटकारते हुए शिव धनुष को तोड़ने वाले को राजाओं के समाज से अलग हो जाने के लिये आज्ञा देते हैं—

अति रिस बोले बचन कठोरा।
कहु जड़ जनक धनुष कै तोरा।
बेगि दिखाउ मूढ़ मत आजू।
उलटहुं महिजहंलगि तब राजू।

इसी प्रकार भगवान राम और लक्ष्मण के साथ बात चीत के समय अपने प्रभाव तथा बल का वर्णव करते हुए परशुराम जी कहते हैं—

वाल-ब्रह्मचारी अति को ही,
विश्व विदित छत्रिय कुल द्रोही।
भुज-बल भूमि भूप बिनु कीन्हीं,
विपुल वार महि देवन्ह दीन्हीं।
लहस्र-बाहु-भुज छेदनि हारा।
परसु विलोकि महीप कुमारा।

परन्तु जब भगवान राम चन्द्र जी तथा लक्ष्मण जी पर उन के बल का प्रभाव नहीं होता तब वह श्री रामचन्द्र जी को विष्णु भगवान का दिया हुआ धनुष चढ़ाने को देते हैं—

राम रमापति कर धनु लेहूं।
खेंचहु चाप मिटै सन्देहू
देत चाप आपुहि चढ़ि गयऊ
परशुराम मन विस्मय भयऊ।
कहि जय जय जय रघुकुल केतू।
भृगुपति गए बनहिं तप हेतू।

भगवान राम को चढ़ाने के लिए दिया हुआ धनुष भी स्वयं विष्णु लोक में चला जाता है।

कर्ण का असत्य बोल कर परशुराम जी से विद्या प्राप्त करना—

कुन्ती की कुमारी अवस्था में उत्पन्न तथा सूर्य का औरस पुत्र कर्ण पहले द्रोणाचार्य से शिक्षा प्राप्त करने के लिए उनके पास गया। परन्तु उसे नीच वर्ण का जान कर गुरु द्रोण ने कहा कि, 'मैं क्षत्रियों के सिवा और किसी को शस्त्र विद्या नहीं सिखाता' तो कर्ण भृगुवंश में श्रेष्ट देवी रेणुका के वीर पुत्र परशुराम जी से झूठ बोल कर धनुर्विद्या प्राप्त करने लगा। जब उस की शिक्षा पूर्ण हो गई तो एक दिन परशुराम जी कर्ण की जांघ पर अपना मस्तक रखकर सो रहे थे। इसी समय भगवान श्री कृष्ण जी की प्रेरणा से इन्द्र देव बज्र-मुख नामक कीड़े का शरीर धारण करके कर्ण की जांघ को काटने लगा और उसमें भारी घाव कर दिया। जिस से कर्ण की जांघ से गाढ़ा और गर्म रक्त बहने लगा। उसके स्पर्श से परशुराम जी की निंद्रा भंग हो गई। उन्होंने कर्ण के धैर्य को देखकर उस पर शंका करते हुए उस से पूछा कि तुम किस वर्ण के हो? क्योंकि ब्राह्मण में इतना धैर्य नहीं हो सकता। तब परशुराम जी के शाप के भय से भयभीत हो कर कर्ण ने सत्य प्रकट कर दिया तथा अपने को सूत-पुत्र बताया। यह सुनकर परशुराम जी ने कहा कि तुमने झूठ बोल कर छल कपट से ब्रह्मास्त्र आदि मुझ से प्राप्त किये हैं। अपने समान वीर के साथ युद्ध करते समय मृत्यु काल के निकट आने पर तुम्हें स्मरण नहीं आयेंगे। और 'मृषा न होइ देव ऋषि वाणी' इस उक्ति के अनुसार अर्जुन से युद्ध करते समय कर्ण के साथ यही घटना घटी तथा अर्जुन के हाथों कर्ण का बध हुआ।

'गुरु द्रोण का परशुराम जी से धनुर्विद्या प्राप्त करना—

अपनी निर्धनता से दुःखी होकर द्रोणाचार्य अपनी जीविका के लिये महेन्द्र पर्वत

पर परशुराम जी के पास गये तथा उन से धन की याचना की। परशुराम जी ने कहा कि हे ब्राह्मण श्रेष्ट। मैंने सारी पृथ्वी समस्त वैभव सहित महर्षि कश्यप का दान कर दिया है। मेरे पास अब केवल धनुर्विद्या तथा मेरा शरीर ही बचा है। इन में से जिस वस्तु की इच्छा हो मैं देने के लिए तैयार हूँ। द्रोण ने उन से धनुर्विद्या पाने के लिए प्रार्थना की। परशुराम जी द्वारा अस्त्र-शस्त्र विद्या प्राप्त करके ही द्रोण विश्व-प्रसिद्ध महान धनुर्धारी तथा द्रोणाचार्य बने।

इन प्रामाणिक ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर ही श्री परशुराम जी को विष्णु का अवतार तथा अलौकिक वीर ब्राह्मण कुल में सूर्य के समान अजर-अमर माना जाता है। वे आज भी अपने यश-रूपी शरीर के द्वारा जीवित है और सदा अजर अमर बने रहेंगे।

इत्यलम्।